आरती श्री यमुना जी की (२)

ओ३म् जय यमुना माता, हरि ओ३म् जय यमुना माता,
जो नहावे फल पावे ये है सुख दाता । ओ३म्...
पावन श्री यमुनाजल शीतल अगम बहैधारा,
जो जन शरण में आता कर देती निस्तारा । ओ३म्...
जो जन प्रातः ही उठकर नित्य स्नान करे,
यम के त्रास न पावे जो नित्य ध्यान करे । ओ३म्...
कलिकाल में महिमा तुम्हारी अटल रही,
तुम्हारा बड़ा महातम चारों वेद कही । ओ३म्...
आन तुम्हारे माता प्रभु अवतार लियो,
नित्य निर्मल जल पीकर कंस को मार दियो । ओ३म्...
नमो मात भय हरणी शुभ मंगल करणी,
मन बेचैन रहत है तुम बिन वैतरणी । ओ३म्...

विवरण

जय हे यमुना माता! जो भी आपके जल प्रवाह में स्नान करता है, वह सुन्दर फल भोगने का भागी होता है । यह यमुना माता परम सुख को देने वाली हैं । आपकी ठंडी एवं दुर्गम रूप से बहती धारा बड़ी ही पवित्र है । इस कलियुग के समय में आपकी महत्ता अत्यन्त सुदृढ़ रही ।

चारों वेद आपकी महत्ता के गान को कहते हैं । आपके पास आकर भगवान ने कृष्ण के रूप में अवतार (जन्म) लिया, तथा रोज आपका शुद्ध जल पीकर उन्होंने कंस को मारा । शुभ को करने वाली तथा हमारे भय को हरने वाली यमुना माता को हमारा नमस्कार है । हमारा मन बहुत ही घबराता है, आपके बिना हमारा बेड़ा पार नहीं हो सकता ।

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.